शिक्षण मंच के रूप में सोशल मीडिया के प्रभाव का अध्ययन (बरेली जनपद के माध्यमिक व उच्चतर माध्यमिक स्कूलों के शिक्षकों के संदर्भ में)

सार

बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय से

जनसंचार एवं पत्रकारिता विभाग विषय

में एम० फिल० उपाधि हेतु प्रस्तुत

मास्टर ऑफ फिलॉसफी (एम० फिल०)

शोधार्थी

सुकान्त तिवारी

नामांकन संख्या - 1531/20

शोध निर्देशक

डॉ. कुँवर सुरेंद्र बहादुर

BABASAHEB BHIMRAO AMBEDKAR UNIVERSITY

LUCKNOW

प्रज्ञा शील करुणा

ESTABLISHED 1996

जनसंचार एवं पत्रकारिता विभाग

मीडिया एवं संचार विद्यापीठ

बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय,

(केंद्रीय विश्वविद्यालय)

विद्या विहार, रायबरेली रोड, लखनऊ - 226025

2022

शोध सारांश

शिक्षा जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं में से एक है। इसकी सहायता से ही व्यक्ति देश, दुनिया और समाज आदि को समझता है तथा उनके नियमों और मूल्यों आदि की जानकारी हासिल करता है। यूँ तो इंसान अपने जन्म से लेकर मृत्यु तक लगातार सीखता ही रहता है। कभी वह अपने अनुभवों से सीखता है तो कभी दूसरों को देखकर। सीखने की यह प्रक्रिया जीवनपर्यंत चलती ही रहती है। इसके साथ ही स्कूल और कॉलेज में जाकर भी शिक्षा प्राप्त की जाती है। इन स्कूलों में व्यक्ति को तमाम विषयों जैसे - हिंदी, गणित, इतिहास, विज्ञान, अंग्रेजी व भूगोल आदि की शिक्षा दी जाती है।

जैसे-जैसे समय बदल रहा है, स्कूली शिक्षा आवश्यक होती जा रही है। स्कूली शिक्षा के बिना व्यक्ति अन्य लोगों से पीछे रह जा रहा है। स्कूली शिक्षा में न सिर्फ विषय सामग्री बल्कि स्कूलों और कक्षाओं का वातावरण भी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। किंतु अचानक आई कोविड-19 महामारी ने स्कूली शिक्षा को तहस-नहस करके रख दिया। दुनिया के लगभग प्रत्येक देश को इस महामारी ने अपनी चपेट में ले रखा है। इस कारण लोगों के जीवन व दिनचर्या दोनों में ही परिवर्तन आए हैं। चूँकि आपसी संपर्क से कोरोना वायरस के संक्रमण का प्रसार अधिक तेजी से होता है, इस कारण इससे बचाव के लिए सामाजिक दूरी (Social Distancing) बहुत आवश्यक है। इसी को ध्यान में रखते हुए कोरोना के प्रसार को रोकने व कम करने के उद्देश्य से विश्व के कई देशों में लॉकडाउन लगाया गया। भारत में भी काफी समय तक लॉकडाउन की स्थिति रही। इस दौरान लोगों से घर से बाहर न निकलने की अपील की गई बशर्ते कोई आपात स्थिति न हो। सिनेमाहॉल, मॉल, जिम, कार्यालय, स्कूल व कॉलेज आदि तब तक के लिए बंद कर दिए गए, जब तक स्थिति में सुधार न आ जाए।

कोरोना काल के दौरान अनगिनत जानें गईं व न जाने कितने लोग बेरोजगार भी हो गए। इस दौरान नौकरी करने वालों को “वर्क फ्रॉम होम” और शिक्षकों व छात्रों को “एजुकेशन फ्रॉम होम” या यूँ कहें “डिजिटल शिक्षण प्रणाली” का सहारा लेना पड़ा। कक्षाएँ स्कूलों और कॉलेजों के भवनों से निकलकर मोबाइल, कंप्यूटर और लैपटॉप पर आ गईं। अध्यापन व पठन-पाठन के लिए ज़ूम, जीमेल, व्हाट्सएप और टेलीग्राम आदि सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स का इस्तेमाल करना पड़ा। कोरोना की इस महामारी ने छात्रों और शिक्षकों को भी सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स पर सक्रिय होने के लिए मजबूर कर दिया। नए

व पुराने सभी अध्यापकों को जीमेल, गूगल मीट, व्हाट्सएप, जूम आदि का इस्तेमाल करना पड़ा। शिक्षण प्रणाली का यह रूप कुछ शिक्षकों को पसंद आया तो कुछ लोगों को इसमें परेशानियों का सामना भी करना पड़ा।
प्रौद्योगिकी की अपनी सीमाएँ हैं। इसकी सहायता से ऑनलाइन कोर्सेस व यूट्यूब के द्वारा शिक्षक अपने ज्ञान को बढ़ा सकते हैं और विद्यार्थियों के लिए नए-नए उदाहरण भी आसानी से ढूँढ़ सकते हैं। प्रौद्योगिकी के प्रयोग से छात्रों को सिखाने के साथ ही अध्यापक भी नई चीजें सीखते हैं। किंतु डिजिटल शिक्षण प्रणाली के द्वारा प्रयोगात्मक विषय जैसे रसायन विज्ञान, भौतिक विज्ञान और गणित आदि विषयों की पढ़ाई ठीक प्रकार से नहीं हो पाती है। इसके अलावा नेटवर्क और कक्षा के दौरान छात्रों द्वारा कैमरा बंद कर लिए जाने जैसी समस्याओं का सामना भी शिक्षकों को करना होता है।
लगभग प्रत्येक प्रौद्योगिकी से कुछ फायदे होते हैं व कुछ नुकसान भी होते हैं। सोशल मीडिया के कारण कोरोना काल में भी पढ़ाई चली, ख़बरें मिलीं व मनोरंजन हुआ। चूँकि घर से निकलना व अधिक लोगों से मिलना सुरक्षित नहीं था, ऐसे में सोशल मीडिया ने लोगों से संपर्क बनाए रखने में सहायता की। किंतु सोशल मीडिया का अधिक प्रयोग लोगों को आदी भी बना रहा है, जिसका प्रभाव मानसिक व शारीरिक स्वास्थ्य पर पड़ता है। अत: सोशल मीडिया के भी फायदे और नुकसान दोनों ही हैं।
theglobalstatistics.com वेबसाइट के लेख के मुताबिक भारतीय प्रतिदिन औसतन 2 घंटे 25 मिनट सोशल मीडिया पर बिताते हैं।[1] Jagranjosh.com के एक लेख के अनुसार जनवरी 2021 तक, भारत में 448 मिलियन सोशल मीडिया उपयोगकर्ता थे। इसी लेख में बार और बेंच की रिपोर्ट का हवाला देते हुए भारत में 53 करोड़ व्हाट्सएप उपयोगकर्ता, 44.8 करोड़ यूट्यूब उपयोगकर्ता, 41 करोड़ फेसबुक उपयोगकर्ता, 21 करोड़ इंस्टाग्राम उपयोगकर्ता और 1.75 करोड़ ट्विटर के उपयोगकर्ता होने की जानकारी दी गई।[2]
mayoclinic.org वेबसाइट के लेख में अमेरिका में 12-15 साल के 6500 से अधिक बच्चों पर हुए 2019 के एक अध्ययन का संदर्भ देते हुए बताया गया

1 *India Social Media Statistics 2021.* (2021, December 14). The Global Statistics. https://www.theglobalstatistics.com/india-social-media-statistics

2 Sharma, R. (2021, June 30). *World Social Media Day 2021: History and Significance.* Jagranjosh. https://www.jagranjosh.com/current-affairs/world-social-media-day-2021-history-and-significance-1625038111-1

कि दिन में सोशल मीडिया पर तीन घंटे से अधिक बिताने वालों में मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं का खतरा बढ़ सकता है।[3]
कोरोना काल में कई अध्यापकों का वेतन कम कर दिया गया व कइयों की नौकरियाँ चली गईं। डिजिटल शिक्षा के कारण पठन-पाठन के तरीकों में बदलाव आया, जिससे लोगों की दिनचर्या भी बदल गई। शिक्षकों का जो समय कक्षाओं में बीतता था, मोबाइलों के साथ बीतने लगा। यदि वे न भी चाहें तो भी उन्हें मोबाइल व सोशल मीडिया का प्रयोग करना ही पड़ रहा था। प्रौद्योगिकी के फायदे तो हैं ही मगर अत्यधिक प्रयोग के कारण कई बार अध्यापकों के व्यवहार में भी परिवर्तन आ सकता है व अन्य समस्याएँ भी हो सकती हैं।
अत: **शिक्षण मंच के रूप में सोशल मीडिया के प्रभाव का अध्ययन (बरेली जनपद के माध्यमिक व उच्चतर माध्यमिक स्कूलों के शिक्षकों के संदर्भ में)** विषय पर प्रस्तुत शोध कार्य के माध्यम से यह जानने का प्रयास किया गया है कि सोशल मीडिया ने शिक्षण कार्य को किस प्रकार प्रभावित किया है। इस शोध के मुख्य उद्देश्य - शिक्षण कार्य में सोशल मीडिया की उपयोगिता का अध्ययन, शिक्षकों पर सोशल मीडिया के प्रभाव का अध्ययन, शिक्षकों के मध्य सोशल मीडिया की लोकप्रियता का अध्ययन व पठन-पाठन में सोशल मीडिया के प्रयोग से होने वाले लाभ व हानि का अध्ययन हैं। शोध के इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए सर्वेक्षण विधि द्वारा आँकड़े एकत्रित किए गए हैं। सर्वेक्षण के लिए बरेली जनपद के हिंदी माध्यम के माध्यमिक व उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के 50 शिक्षकों और अंग्रेजी माध्यम के माध्यमिक व उच्चतर माध्यमिक स्कूलों के 50 शिक्षकों से प्रश्नावली भरवाई गई है। इन शिक्षकों का चयन सुविधाजनक प्रतिदर्श चयन (Convenience sampling) विधि से किया गया है। प्रतिदर्श में शामिल शिक्षकों को ई-मेल व व्हाट्सएप के माध्यम से प्रश्नावली भेजी गई है। साथ ही कुछ अध्यापकों से प्रश्नावली शोधार्थी द्वारा स्वयं जाकर भरवाई गई है। इस अध्ययन के लिए शोध की विवरणात्मक प्रविधि का प्रयोग किया गया है। अध्ययन एवं विश्लेषण की दृष्टि से प्रस्तुत विषय को पाँच अध्यायों में विभाजित किया गया है, यथा -
प्रथम अध्याय के अंतर्गत शोध विषय की **प्रस्तावना** प्रस्तुत की गई है। इसमें विषय की भूमिका के साथ-साथ शिक्षा व शिक्षण के तमाम क्षेत्रों और प्रकारों आदि पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है। इसके अलावा मीडिया,

[3] *Teens and social media use: What's the impact?*. (2019, December 21). Mayo Clinic. https://www.mayoclinic.org/healthy-lifestyle/tween-and-teen-health/in-depth/teens-and-social-media-use/art-20474437

उसके प्रकार, क्षेत्र, महत्व तथा सोशल मीडिया और शिक्षा का संबंध बताने की कोशिश की गई है।
द्वितीय अध्याय **साहित्य समीक्षा** में विषय से सम्बंधित साहित्य का अवलोकन किया गया है। इसमें तमाम शोधार्थियों के शोध आलेखों, शोध प्रबंधों, रिसर्च जरनलों के शोध आलेखों तथा अखबारों और वेबसाइटों के लेखों आदि का उल्लेख किया गया है।
तृतीय अध्याय **शोध प्रविधि** में इस शोध के उद्देश्यों, शोध प्रश्नों, प्रस्तुत शोध के महत्व, शोध के विस्तार, शोध की सीमाओं तथा शोध प्रविधि पर चर्चा की गई है।
चतुर्थ अध्याय **आँकड़ा संकलन एवं विश्लेषण** में कुल 100 उत्तरदाताओं के मध्य किए गए सर्वेक्षण से प्राप्त आँकड़ों का विस्तार से विश्लेषण किया गया है।
पाँचवें अध्याय **निष्कर्ष एवं सुझाव** में संकलित आँकड़ों के विश्लेषण के आधार पर प्रस्तुत अध्ययन का निष्कर्ष प्रस्तुत किया गया है तथा शोधार्थी द्वारा कुछ सुझाव भी बताए गए हैं।
वर्तमान दौर डिजिटल मीडिया का दौर है। छोटे बच्चों से लेकर वृद्ध लोग तक मोबाइल, इंटरनेट और सोशल मीडिया का प्रयोग कर रहे हैं। इसके चलते शिक्षा एवं सोशल मीडिया भी एक दूसरे से जुड़ गए हैं। विद्यार्थियों द्वारा गूगल व यूट्यूब आदि के माध्यम से अपने प्रश्नों के हल ढूँढ़े जा रहे हैं तो अध्यापकों द्वारा भी तमाम डिजिटल प्लेटफॉर्म्स पर अपनी कक्षाएँ उपलब्ध करवाई जा रही हैं। इसके अलावा अध्यापक भी डिजिटल मीडिया की सहायता से अपने विद्यार्थियों के साथ नई-नई चीजें सीख रहे हैं। ऐसे में कोरोना महामारी के कारण लगाए गए लॉकडाउन ने शिक्षण में डिजिटल मीडिया व सोशल मीडिया के प्रयोग को और अधिक बढ़ा दिया। स्कूल बंद होने के कारण अध्यापकों के पास डिजिटल शिक्षण प्रणाली ही एक मात्र विकल्प थी, जिससे लॉकडाउन में भी पठन-पाठन जारी रह सकता था। लॉकडाउन से पहले सिर्फ वे अध्यापक ही डिजिटल शिक्षण प्रणाली का प्रयोग कर रहे थे, जो इससे परिचित थे। किंतु लॉकडाउन के दौरान डिजिटल शिक्षण प्रणाली का उपयोग करना प्रत्येक अध्यापक की मजबूरी बन गई। इनमें काफी लोग ऐसे भी थे, जो डिजिटल प्लेटफॉर्म्स से परिचित नहीं थे व जिनके पास पर्याप्त संसाधन उपलब्ध नहीं थे। इन लोगों को काफी समस्याएँ हुईं। लॉकडाउन के दौरान व्हाट्सएप, टेलीग्राम, जीमेल, यूट्यूब, गूगल मीट तथा जूम आदि की सहायता से पठन-पाठन का कार्य व उसके प्रबंधन का कार्य किया गया।

संकलित आँकड़ों के विश्लेषण से यह ज्ञात हुआ कि लॉकडाउन के दौरान सभी स्कूलों में ऑनलाइन कक्षाओँ के माध्यम से पढ़ाई करवाई गई। इस दौरान शिक्षकों को डिजिटल डिवाइस की कमी व खराब इंटरनेट जैसी समस्याओं का सामना भी करना पड़ा। इसके अलावा गृहकार्य देने व जाँचने में तथा परीक्षा लेने में भी शिक्षकों को परेशानी हुई। सर्वेक्षण में भाग लेने वाले 50% से अधिक उत्तरदाताओं को मोबाइल/लैपटॉप का अधिक इस्तेमाल करने के कारण अनिद्रा व सिरदर्द जैसी समस्याएँ हुईं। लगभग 60% लोगों को ऑनलाइन शिक्षण कार्य अच्छा लगा किंतु लगभग इतने ही लोगों ने भविष्य में स्कूलों में जाकर ही पढ़ाने की इच्छा व्यक्त की। अत: ऐसा कहा जा सकता है कि शिक्षण में सोशल मीडिया का प्रयोग अध्यापकों को पसंद तो आ रहा है किंतु कई जटिलताओं व पर्याप्त संसाधन उपलब्ध न होने के कारण वे अभी इसे पूरी तरह से स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं हैं।